



बिहार राज्य के शिक्षक – प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि एवं उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

Jai Prakash Pal (Research Scholar)

Department of Education, Magadh University Bodh Gaya, Bihar

Dr. Md. Sadre Alam (Assistant Professor)

Department of Education,

Gaya College, Gaya (Supervisor)

सार

वर्तमान अध्ययन को बिहार में शिक्षक शिक्षा संस्थानों के संदर्भ में वैश्वीकरण के साथ तालमेल बिठाने के लिए मानव संसाधन विकास की चुनौतियों का पता लगाने के लिए डिज़ाइन किया गया था। शिक्षा का लक्ष्य मानव संसाधनों का विकास करना है। जब हम मानव संसाधन विकास की बात करते हैं, तो हम उच्च शिक्षा के साथ-साथ स्कूल स्तर पर शामिल मानव संसाधनों के विकास के बारे में बात कर रहे हैं। इनमें शिक्षक, शैक्षणिक संस्थानों में काम करने वाले सहायक कर्मचारी, राज्य और केंद्रीय स्तर पर शैक्षिक प्रशासक, शिक्षा के योजनाकार और नीति निर्माता आदि शामिल हैं। इन सभी श्रेणियों के लोगों का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि उच्च शिक्षा की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि वे अपनी भूमिका कितनी अच्छी तरह निभाते हैं। विभिन्न स्तरों पर और विभिन्न भूमिकाएँ निभाने वाले लोगों को अपनी भूमिकाओं में प्रभावी होने के लिए विभिन्न दक्षताओं की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे वातावरण बदल रहा है और ज्ञान के आधार में लगातार सुधार हो रहा है, ये दक्षताएँ भी समय-समय पर बदल रही हैं। ऐसे गतिशील और बदलते परिवेश से निपटने के लिए समान रूप से या उससे भी तेजी से विकसित होने वाले मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है। शैक्षिक प्रणाली के प्रदर्शन से संबंधित हर कोई इस बात से सहमत है कि शिक्षण गुणों में सुधार किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में एक उच्च प्राथमिकता है। शिक्षकों को परिवर्तन एजेंटों की भूमिका सौंपी जाती है और उन्हें नई चुनौतियाँ पेश की जाती हैं, जैसे शिक्षा को वैश्विक और स्थायी बनाना, जीवन भर किसी भी वातावरण (कक्षा के अंदर या बाहर) में सेवा देने के लिए पर्याप्त लचीला और समुदाय को प्रतिबिंबित करना। शिक्षकों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में परिवर्तनों के प्रति रचनात्मक रूप से अनुकूलन करना सीखना होगा और ऐसी पीढ़ियों को तैयार करना होगा जो सार्वभौमिक, आलोचनात्मक और रचनात्मक हों और जो दृढ़ हों।

प्रस्तावना

शैक्षिक प्रणाली के प्रदर्शन से संबंधित हर कोई इस बात से सहमत है कि शिक्षण के गुणों में सुधार किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में एक उच्च प्राथमिकता है। शिक्षकों को परिवर्तन एजेंटों की भूमिका सौंपी जाती है और उन्हें नई चुनौतियाँ पेश की जाती हैं, जैसे शिक्षा को वैश्विक और स्थायी बनाना, जीवन भर किसी भी वातावरण (कक्षा के अंदर या बाहर) में सेवा देने के लिए समुदाय को प्रतिबिंबित करना। शिक्षकों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में परिवर्तनों के प्रति रचनात्मक रूप से अनुकूलन करना सीखना होगा और ऐसी पीढ़ियों को तैयार करना होगा जो सार्वभौमिक, आलोचनात्मक और रचनात्मक हों और जो दृढ़ हों।

उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ पहचान एवं सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए एक यथार्थवादी दृष्टिकोण में इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि शिक्षक अपने गुणों, दोषों, कर्तव्यों और अधिकारों के साथ सामान्य इंसान हैं। सेवाकालीन प्रशिक्षण शब्द का तात्पर्य उन शिक्षकों के प्रशिक्षण से है जो पहले से ही सेवा में हैं। यह अधिकतर शिक्षक के खाली समय में या स्कूल प्राधिकारियों द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराए गए समय में दिया जाना चाहिए।

एक अच्छे शिक्षक के लिए उसके ज्ञान, कौशल, व्यक्तित्व और रुचियों का हर पहलू संभावित मूल्य का होता है। इसलिए, अपने करियर के दौरान वह जिस भी अनुभव से गुजरता है, चाहे वह कितना भी अप्रासंगिक क्यों न हो, उसे इन-सर्विस ट्रेनिंग के रूप में वर्णित किया जा सकता है। सेवाकालीन प्रशिक्षण में वह सब कुछ शामिल होता है जो एक शिक्षक के साथ उसकी पहली नियुक्ति के दिन से लेकर उसके सेवानिवृत्त होने के दिन तक होता है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उस तरीके में योगदान देता है। और अपने पेशेवर कर्तव्यों को निष्पादित करता है।

शिक्षक शिक्षा का अर्थ

शिक्षार्थी की उपलब्धि की गुणवत्ता और सीमा मुख्य रूप से शिक्षक की क्षमता, संवेदनशीलता और शिक्षक प्रेरणा से निर्धारित होती है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने शिक्षक की शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है - पूर्व-प्राथमिक से लेकर शिक्षा अनुसंधान और व्यक्तियों के प्रशिक्षण का एक कार्यक्रम उच्चशिक्षास्तर शिक्षक शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जो इससे संबंधित है शिक्षक दक्षता और योग्यता का विकास जो शिक्षक को पेशे की आवश्यकताओं को पूरा करने और उसमें आने वाली चुनौतियों का सामना करने में सक्षम और सशक्त बनाएगा। गुड्स डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन के अनुसार शिक्षक शिक्षा का अर्थ है, सभी औपचारिक और गैर-औपचारिक गतिविधियाँ और अनुभव जो किसी व्यक्ति को शैक्षिक पेशे के सदस्य की जिम्मेदारियों को संभालने या अपनी जिम्मेदारियों को अधिक प्रभावी ढंग से निर्वहन करने के लिए योग्य बनाने में मदद करते हैं। 1906-1956 में शिक्षक तैयारी के कार्यक्रम को शिक्षक प्रशिक्षण कहा जाता था। इसने शिक्षकों को मैकेनिक या तकनीशियन के रूप में तैयार किया। इसके लक्ष्य सीमित थे और इसका ध्यान केवल कौशल प्रशिक्षण पर था।

इसलिए शिक्षक की शिक्षा का परिप्रेक्ष्य बहुत संकीर्ण था और इसका दायरा भी सीमित था। जैसा कि डब्ल्यू.एच. किलपैट्रिक ने कहा, —प्रशिक्षण जानवरों और सर्कस कलाकारों को दिया जाता है, जबकि शिक्षा मनुष्यों को दी जाती है। शिक्षक शिक्षा में शिक्षण कौशल, सुदृढ़ शैक्षणिक सिद्धांत और व्यावसायिक कौशल शामिल हैं। शिक्षक शिक्षा = शिक्षण कौशल \$ शैक्षणिक सिद्धांत \$ व्यावसायिक कौशल। शिक्षण कौशल में विभिन्न तकनीकों, दृष्टिकोणों और रणनीतियों में प्रशिक्षण और अभ्यास प्रदान करना शामिल होगा जो शिक्षकों को योजना बनाने और निर्देश देने, उचित सुदृढीकरण प्रदान करने और प्रभावी मूल्यांकन करने में मदद करेगा। इसमें प्रभावी कक्षा प्रबंधन कौशल, शिक्षण सामग्री की तैयारी और उपयोग और संचार कौशल शामिल हैं। शैक्षणिक सिद्धांत में दार्शनिक, समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक विचार शामिल हैं जो शिक्षकों को कक्षा में शिक्षण कौशल का अभ्यास करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करने में सक्षम बनाएंगे। सिद्धांत चरण विशिष्ट है और उन आवश्यकताओं और आवश्यकताओं पर आधारित है जो उस चरण की विशेषता हैं। व्यावसायिक कौशल में तकनीकें शामिल हैं।

शिक्षक की प्रकृति

1. शिक्षक की शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और इसकी सेवापूर्व और सेवाकाल में है। सेवा घटक एक दूसरे के पूरक हैं। इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन (1987) के अनुसार, —शिक्षक की शिक्षा पर तीन चरणों में विचार किया जा सकता है: प्री-सर्विस, इंडक्शन और इन-सर्विस। तीन चरणों को एक सतत प्रक्रिया का हिस्सा माना जाता है।
2. शिक्षक की शिक्षा इस सिद्धांत पर आधारित है कि —शिक्षक बनाये जाते हैं, पैदा नहीं होते, इस धारणा के विपरीत, —शिक्षक पैदा होते हैं, बनाये नहीं जाते। चूँकि शिक्षण को एक कला और एक विज्ञान माना जाता है, इसलिए शिक्षक को न केवल ज्ञान प्राप्त करना होता है, बल्कि कौशल से भी हासिल करना होता है, जिसे व्यापार की तरकीबें कहा जाता है।
3. शिक्षक की शिक्षा व्यापक और सर्वांगीण है। शिक्षकों के लिए सेवापूर्व और सेवाकालीन कार्यक्रमों के अलावा, इसका उद्देश्य विभिन्न सामुदायिक कार्यक्रमों और विस्तार गतिविधियों, जैसे वयस्क शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम, साक्षरता और समाज की विकास गतिविधियों में शामिल होना है।
4. गतिशील समाज की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम शिक्षकों को तैयार करने के लिए, शिक्षक शिक्षा को हाल के विकास और रुझानों से अवगत रहना होगा।
5. शिक्षक शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया का सार इसके पाठ्यक्रम, डिजाइन, संरचना, संगठन और लेनदेन के तरीकों के साथ-साथ इसकी उपयुक्तता की सीमा में निहित है।
6. अन्य व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों की तरह शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में एक ज्ञान आधार होता है जो क्षेत्र अनुप्रयोगों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होता है और इसमें कई संज्ञानात्मक विषयों में उपलब्ध सैद्धांतिक समझ का सार्थक, वैचारिक मिश्रण शामिल होता है।
7. शिक्षक शिक्षा मंच-विशिष्ट कार्यक्रमों में विभेदित हो गई है। इससे पता चलता है कि ज्ञान का आधार पर्याप्त रूप से विशिष्ट है और सभी चरणों में विविधतापूर्ण है, जिसका उपयोग उन

कार्यों के लिए प्रवेशी शिक्षकों को तैयार करने की प्रभावी प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए किया जाना चाहिए जो एक शिक्षक से प्रत्येक चरण में करने की उम्मीद की जाती है।

8. यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें इसके इनपुट, प्रक्रियाओं और आउटपुट की परस्पर निर्भरता शामिल है।

शिक्षक की शिक्षा का दायरा

शिक्षक शिक्षा के दायरे को निम्नलिखित तरीकों से समझा जा सकता है;

- शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षक शिक्षा
- शिक्षकीय शिक्षा का त्रिकोणीय आधार
- शिक्षकीय शिक्षा के पहलू

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षक शिक्षा

शिक्षक की शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षकों तक पहुँचती है, अर्थात् पूर्व-प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक और तृतीयक। प्रत्येक स्तर पर छात्रों और शिक्षा की आवश्यकताएँ और आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। इसलिए स्तरीय और मंच-विशिष्ट शिक्षक तैयारी आवश्यक है। शिक्षक शिक्षा व्यावसायिक संस्थानों के शिक्षकों में शिक्षण कौशल के विकास में भी मदद करती है। व्यावसायिक संस्थानों में शिक्षकों के पास अपने-अपने विषयों का केवल सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान होता है। उन्हें अपने व्यवसायों में प्रवेश करने वाले छात्रों से निपटने के लिए विशेष शिक्षक प्रशिक्षण इनपुट की आवश्यकता होती है। शिक्षक शिक्षा विशेष शिक्षा और शारीरिक शिक्षा तक भी पहुँचती है। इस प्रकार जहाँ शिक्षक हैं, वहाँ शिक्षक शिक्षा होगी। ज्ञान का आधार पर्याप्त रूप से विशिष्ट है और सभी चरणों में विविधतापूर्ण है, ताकि प्रवेशी शिक्षकों को उन कार्यों के लिए तैयार करने की प्रभावी प्रक्रियाएँ विकसित की जा सकें, जो एक शिक्षक से प्रत्येक चरण में करने की अपेक्षा की जाती है।

शिक्षक शिक्षा का त्रिकोणीय आधार

शिक्षा के प्रत्येक चरण के लिए प्रासंगिक ज्ञान आधार के निर्माण के लिए प्रत्येक चरण में शिक्षक शिक्षा से संबंधित मामले की उच्च स्तर की शैक्षणिक और बौद्धिक समझ की आवश्यकता होती है। इसमें शिक्षा से संबंधित विषयों, अर्थात् मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और दर्शन से सैद्धांतिक ज्ञान का चयन करना और इसे शिक्षक शिक्षा के लिए उपयुक्त रूपों में परिवर्तित करना शामिल है। शिक्षक शिक्षा अपनी सामग्री दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के विषयों से प्राप्त करती है। ये विषय शिक्षक शिक्षा की बेहतर समझ और अनुप्रयोग के लिए आधार प्रदान करते हैं।

शिक्षक की शिक्षा के पहलू

शिक्षक की शिक्षा का संबंध ऐसे पहलुओं से है, जैसे, कौन (शिक्षक, किसको) छात्र शिक्षक (क्या) सामग्री (और कैसे) शिक्षण रणनीति। शिक्षक की शिक्षा शिक्षक प्रशिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर है। शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रमों में शैक्षणिक इनपुट की गुणवत्ता और भावी शिक्षकों को तैयार करने

के उद्देश्य से उनका प्रभावी उपयोग काफी हद तक शिक्षक प्रशिक्षकों की पेशेवर क्षमता और शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रम को मजबूत करने के लिए इसका उपयोग करने के तरीकों पर निर्भर करता है। इस प्रकार, शिक्षक की शिक्षा सबसे पहले प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षकों की तैयारी से संबंधित है।

भारत में शिक्षक की शिक्षा का इतिहास

इस सदी की शुरुआत में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षा में मुख्य रूप से पुनरुच्चरी पाठ्यक्रम व्याख्यान, अभिविन्यास पाठ्यक्रम और सम्मेलन शामिल थे। इन्हें आम तौर पर छुट्टियों की अवधि के दौरान किसी केंद्रीय स्थित स्थान या शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में व्यवस्थित किया जाता था। इनमें से अधिकांश गतिविधियाँ विभिन्न आयोगों की सिफारिशों के प्रति छिटपुट प्रतिक्रियाएँ थीं, जिन्हें नियुक्त किया गया था। समय-समय पर विद्यमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं का अध्ययन करना।

वर्तमान अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

अध्ययन के उद्देश्य प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

1. बिहार राज्य के शिक्षक - प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं का शिक्षण अभिरूचि का अध्ययन करना ।
2. बिहार राज्य के शिक्षण-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं का उपलब्धि का अध्ययन करना ।
3. बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति उपलब्धि का अध्ययन करना ।

परिकल्पना

1. बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत - प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि एवं उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी - एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि एवं उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत - प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. बिहार राज्य के शिक्षक - प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
5. बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी - एवं ग्रामीण के छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
6. बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

7. बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्राध्यापकों का शिक्षण अभिरूचि के प्रति रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

साहित्य की समीक्षा

संबंधित साहित्य की समीक्षा से जांच के तहत अध्ययन के बारे में बेहतर समझ और स्पष्टता विकसित होती है। समीक्षा अन्वेषक को अध्ययन में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। जिसमें व्यवस्थित पहचान स्थान और दस्तावेजों का विश्लेषण शामिल होता है। जिसमें अनुसंधान से संबंधित जानकारी होती है। जो उस पहलू पर केंद्रित होती है जो शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों, शोध प्रबंध थीसिस और समस्या पर जानकारी के अन्य स्रोतों की समीक्षा करती है। किसी भी शोध अध्ययन की योजना में जांच करना महत्वपूर्ण चरणों में से एक है। संबंधित साहित्य की समीक्षा शोधकर्ता को अपने दायर की सीमाओं को परिभाषित करने में सक्षम बनाती है।

राष्ट्रीय अध्ययन

शर्मा (2016) ने अपने अध्ययन किया कि छात्र शिक्षकों का अनुशासन और लिंग पुरुष और महिला कला छात्र शिक्षकों की शिक्षण योग्यता में योगदान नहीं देता है, यह देखा गया कि महिला कला छात्र शिक्षकों ने अपने समकक्ष पुरुष कला छात्र शिक्षकों की तुलना में काफी अधिक औसत अंक प्राप्त किए। यह पाया गया कि छात्र शिक्षक की शिक्षण योग्यता उनकी सामान्य शिक्षण क्षमता, व्यावसायिक रुचि और शैक्षणिक उपलब्धियों से काफी संबंधित थी।

अरुण और गीता (2016) ने पाया कि दोनों समूहों (पुरुष और महिला) के भावी शिक्षकों में अन्यत्तीन योग्यताओं की तुलना में शिक्षण के लिए उच्च योग्यता है मार्गदर्शन, प्रबंधन और अनुसंधान है। पुरुष भावी शिक्षक मार्गदर्शन और प्रबंधन योग्यता में बेहतर थे जबकि महिला भावी शिक्षकों में शिक्षण और अनुसंधान के लिए उच्च योग्यता थी।

कौर (2019) ने पाया कि बी.एड. कार्यक्रम शिक्षक प्रभावशीलता, शिक्षण योग्यता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और भावी शिक्षकों के व्यक्तित्व गुणों में सकारात्मक बदलाव लाने में प्रभावी था। अध्ययन से पता चला कि बी.एड. कार्यक्रम का पुरुष भावी शिक्षकों की तुलना में महिला भावी अध्यापकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर अधिक अनुकूल प्रभाव पड़ा। इसमें आगे कहा गया कि बीएड कार्यक्रम महिला और पुरुष दोनों भावी शिक्षकों की शिक्षण योग्यता और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण को बढ़ाने में समान रूप से प्रभावी था। अध्ययन ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि भावी महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षक अधिक तनावग्रस्त और निराश थे।

कुरैशी और अहमद (2020) ने मानसिक क्षमता, बच्चों के प्रति दृष्टिकोण, पेशेवर जानकारी और कुल शिक्षण योग्यता के माप पर पुरुष और महिला भावी शिक्षकों के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया। मानसिक क्षमता, पेशेवर जानकारी और कुल शिक्षण योग्यता के संबंध में पुरुष विषय अपने महिला समकक्षों से बेहतर पाए गए।

शोध अंतराल

व्याख्यान देना, आलोचना करना और प्राधिकरण के प्रभाव और प्रतिबंध को उचित ठहराना पुरुष और महिला समूहों और भाषा, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान और गणित समूहों में शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के साथ नकारात्मक रूप से सहसंबद्ध था। विद्यार्थियों की बातचीत और विद्यार्थी दीक्षा अनुपात पुरुष और महिला समूहों में शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण से जुड़े थे। सामाजिक अध्ययन के शिक्षक अपने कक्षा व्यवहार में शिक्षक वार्तालाप अनुपात में समान थे, विज्ञान और हिंदी शिक्षक अपने कक्षा व्यवहार में शिक्षक वार्तालाप अनुपात में समान थे। सामाजिक अध्ययन शिक्षकों के लिए शिक्षक वार्ता अनुपात गणित शिक्षकों के शिक्षक वार्ता अनुपात की तुलना में अधिक था सामाजिक अध्ययन शिक्षकों के शिक्षक वार्ता अनुपात की तुलना में हिंदी शिक्षकों का शिक्षक वार्ता अनुपात अधिक था। अध्ययन के दौरान विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन और हिंदी शिक्षकों के बीच उनके कक्षा व्यवहार में छात्रों के बातचीत अनुपात में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। विज्ञान और हिंदी के शिक्षक अपने कक्षा व्यवहार में मौन या भ्रम के अनुपात में समान थे, लेकिन गणित के शिक्षकों के लिए मौन या भ्रम का अनुपात सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के मौन या भ्रम के अनुपात की तुलना में अधिक था। पारंपरिक शिक्षण तकनीक, शिक्षण कौशल अभ्यास और योगात्मक पैटर्न के माध्यम से एकीकरण प्रशिक्षण का सामान्य शिक्षण क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण और सकारात्मक प्रभाव पड़ा। शिक्षण कौशल का शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सकारात्मक प्रभाव पड़ा। योगात्मक पैटर्न के माध्यम से कौशल का एकीकरण पारंपरिक तकनीक से बेहतर पाया गया और सामान्य शिक्षण क्षमता और शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में प्रभावी पाया गया।

अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन

फैसिंगर (2019) ने अध्ययन किया कि मिडवेस्टर्न लिबरल आर्ट कॉलेज की 51 कक्षाओं में कक्षाएं कॉलेज कक्षाओं में छात्रों की भागीदारी को कैसे प्रभावित करती हैं। अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि कम भागीदारी वाले वर्गों के विपरीत, उच्च भागीदारी वाले वर्गों को उनके सदस्यों के लिए अधिक सहयोगी, सहायक, सम्मानजनक और परिचित के रूप में देखा गया। निम्न भागीदारी वर्ग के प्रोफेसर्स की उनके बारे में बहुत अधिक सकारात्मक धारणाएँ थीं।

फॉक्स और ब्लैक-ह्यूजेस (2019) ने मिनेसोटा स्टेट यूनिवर्सिटी, मैनकाटो के तीन अलग-अलग वर्ग वर्गों में सामाजिक कार्य, इतिहास पढ़ाने के लिए इंटरनेट का उपयोग बनाम व्याख्यान की तुलना की। अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि छात्रों को वेब-आधारित शिक्षा में उपयोग की जाने वाली तकनीक के साथ बातचीत करने में कठिनाई होती है, वे प्रौद्योगिकी को नकारात्मक रूप से देख सकते हैं - जिससे पाठ्यक्रम में उनकी समग्र शिक्षा प्रभावित हो सकती है। छात्रों को अपने सीखने के लिए कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के साथ बातचीत करना पसंद नहीं आया। छात्रों ने टिप्पणी की कि वे पूरी तरह से इंटरनेट के माध्यम से पाठ्यक्रम सामग्री सीखने में सहज महसूस नहीं करते थे, और कंप्यूटर के साथ सहजता की कमी के कारण वे इंटरनेट में खो गए थे। छात्रों ने बताया कि वे इसे सीखने के लिए प्रौद्योगिकी के साथ इंटरफेस करने के बजाय सामग्री को सुनना पसंद करते हैं।

फ्रेडरिकसन एट अल. (2019) ने 64 कॉलेजों और न्यूयॉर्क के स्टेट यूनिवर्सिटी से एक अतुल्यकालिक ऑनलाइन पाठ्यक्रम में नामांकित लगभग 400,000 छात्रों के बीच छात्रों की संतुष्टि और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के साथ कथित सीखने का अध्ययन किया सिद्धांत और उदाहरण। अध्ययन से प्रशिक्षक के साथ बातचीत और कथित सीखने के स्तर

के बीच सकारात्मक संबंध का पता चला। यह संबंध महत्वपूर्ण था क्योंकि जिन छात्रों को लगता था कि उनके पास अपने ऑनलाइन प्रशिक्षकों तक पर्याप्त पहुंच नहीं है, उन्हें लगता है कि उन्होंने कम सीखा है।

कैस्टील (2017) ने दक्षिण पूर्वी लुइसियाना जिले के आठ स्कूलों के 417 (184 अफ्रीकी अमेरिकी और 233 कोकेशियन अमेरिकी) सातवीं कक्षा के छात्रों और सोलह कोकेशियन अमेरिकी महिला शिक्षकों के बीच एकीकृत कक्षाओं में शिक्षक-छात्र बातचीत और दौड़ की जांच की। परिणामों से पता चला कि अफ्रीकी अमेरिकी छात्रों के साथ उनके शिक्षकों द्वारा कोकेशियन अमेरिकी छात्रों की तुलना में अनुकूल व्यवहार नहीं किया गया। शिक्षक अमेरिकी कोकेशियन छात्रों के साथ अधिक सकारात्मक रूप से एकीकृत हुए। कोकेशियन अमेरिकी लड़कों को सबसे अनुकूल उपचार मिला और उन्होंने सबसे अधिक छात्र-शिक्षक संपर्क शुरू किया।

शोध पद्धति

अध्ययन का डिज़ाइन

इस शोध में अध्ययन डिज़ाइन में सर्वेक्षण विधि का पालन किया गया। जो कि बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले में संचालित मगध विश्वविद्यालय से सम्बद्धता रखने वाले शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय को सम्मिलित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कुल 500 प्रशिक्षुओं जिसमें 250 छात्राध्यापक एवं 250 छात्राध्यापिकाएं का चयन किया है।

कामिल बुल्के (1985) अंग्रेजी शब्द कोष के अनुसार - 'सर्वे का अर्थ चारों ओर देखना या यथार्थ अवलोकन करना है।' सर्वेक्षण विधि को दत्तों की प्राप्ति हेतु इसलिए प्रयुक्त किया जाता है। क्योंकि यह वर्तमान स्थिति का स्पष्ट वर्णन करती है। यह विधि किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर समूह से सम्बन्धित होती है व इसमें अधिक से अधिक लोगों को समाहित किया जा सकता है। इस विधि का सम्बन्ध प्रायः वर्तमान में उपस्थित, स्थितियों, विश्वासों व्यवहारों, दृष्टिकोणों एवं अभिवृत्तियों से है।

नमूनाकरण

न्यादर्श :-

न्यादर्श एक बड़े समूह में से चयनित होता प्रतिनिधित्व प्राप्त समूह है, जिस पर अनुसंधान कार्य किया जाता है। जनसंख्या के अनुपात को प्रतिनिधित्व करने वाले अनुपात को ही न्यादर्श कहते हैं।

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन की विधि :-

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक विधि का चयन किया गया है, क्योंकि इस विधि द्वारा न्यादर्श में से प्रत्येक के चुने जाने की संभावना समान रहती है। इसमें न तो समष्टि को स्तर में बांटा जाता है न शोधार्थी की सुविधा का ध्यान रखा जाता है। इसलिए न्यादर्श चयन के लिए यादृच्छिक विधि का चयन किया गया है। बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले में संचालित मगध विश्वविद्यालय से सम्बद्धता रखने वाले शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय को सम्मिलित किया है। बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले में संचालित मगध विश्वविद्यालय से सम्बद्धता रखने वाले 15 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कुल 500 प्रशिक्षुओं जिसमें 250 छात्राध्यापक एवं 250 छात्राध्यापिकाएं का चयन यादृच्छिक की न्यायदेश चयन विधि से किया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण-:

शोधार्थी अपने शोध अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु दत्त संकलन के लिए निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया जो कि इस प्रकार से है:-

1. प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचिमापन के लिए डॉ. राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है। (मिश्रा, 2008)
2. उपलब्धि अभिप्रेरणा मापन के लिए डॉ. वी. पी. भार्गव द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है। (अरोड़ा, 2008)
3. अध्यापन व्यवसाय के मापन के लिए डॉ. एस. पी. अहुलवालिया द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है। (एस. पी. अहुलवालिया, 1978)

प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि परीक्षण) मानकीकृत

अनुसंधित्सु द्वारा बी.एड. प्रशिक्षार्थियों के प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचिको को ज्ञात करने के लिए डॉ. राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित ‘‘ प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि परीक्षण’’ प्रयुक्त किया है।

इस परीक्षण में छः आयामों से संबंधित 48 विषेण दिये गये है, जो निम्न लिखित है:-

तालिका 1 प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि परीक्षण (मानकीकृत)

क्र.स.	आयाम	विशेषण
1.	शारीरिक	8
2.	सामाजिक	8
3.	भावात्मक	8
4.	शैक्षिक	8
5.	नैतिक	8
6.	बौद्धिक	8
	योग	48

इस परीक्षण में परिणामों की व्याख्या पाँच बिन्दु स्केल पर की जाती है।

फलांकन

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के अध्ययन हेतु प्रत्येक सकारात्मक कथन के उत्तर हेतु क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 व नकारात्मक कथन के उत्तर हेतु 1, 2, 3, 4, 5 दिये जाते है तथा

प्राप्त प्राप्तांको का योग प्राशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि को दर्शाता है। उच्चतम प्राप्तांक उच्च प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि को दर्शाता है तथा निम्नतम प्राप्तांक निम्न प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि को दर्शाता है।

विश्वसनीयता

परीक्षण व पुनः परीक्षण के द्वारा इस प्रश्नावली की विश्वसनीयता 0.91 प्राप्त हुई है। साथ ही विभिन्न क्षेत्रों के लिए यह 0.67 से 0.88 प्राप्त हुई। क्षेत्रवार निम्नलिखित है:-

तालिका 2 प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचिका आयाम

क्र.स.	"प्रशिक्षुओं" का शिक्षण अभिरूचि का आयाम	कथनों की संख्या	सहसंबंध गुणांक
1.	शरीरिक	8	0.77
2.	सामाजिक	8	0.83
3.	भावात्मक	8	0.79
4.	शैक्षिक	8	0.88
5.	नैतिक	8	0.67
6.	बौद्धिक	8	0.79

वैधता

इस प्रश्नावली को विशेषज्ञों की राय द्वारा वैधता प्रदान की गई। 100 पद 25 मनोवैज्ञानिकों को प्रदान किये गये। पदों का उच्चतम समायोजन तथा 80 प्रतिशत से अधिक वाले पदों का ही चयन किया गया है अतः इस प्रश्नावली की विषयवस्तु व संरचित वैधता पाई गई।

तालिका 3 क्षेत्रवार प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि का स्कोर व वर्गीकरण

क्र.स.	प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि आयाम स्कोर	श्रेणी
1.	33&40	उच्च स्व प्रत्यय
2.	25&32	औसत से ऊपर
3.	17&24	औसत
4.	9&16	औसत से नीचे
5.	0&8	निम्न

प्रदत्तो का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

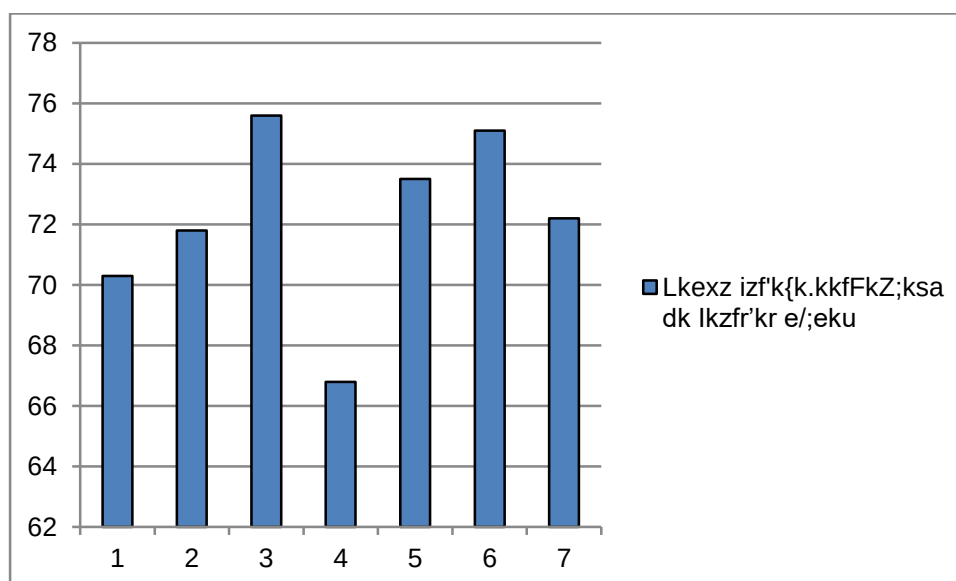
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत समग्र प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि के प्रति अभिमत का प्रतिष्ठत मध्यमान के आधार पर विश्लेषण किया जाएगा ।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या-:

H03: बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत - प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 4 बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत समग्र प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि के प्रति अभिमत का प्रतिष्ठत मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि मापनी के क्षेत्र	समग्र प्रशिक्षणार्थियों का प्रतिष्ठत मध्यमान
1.	शारीरिक	70.3
2.	समाजिक	71.8
3.	संविगिक	75.6
4.	शैक्षिक	66.8
5.	नैतिक	73.5
6.	बौद्धिक	75.1
7.	समग्र	72.2



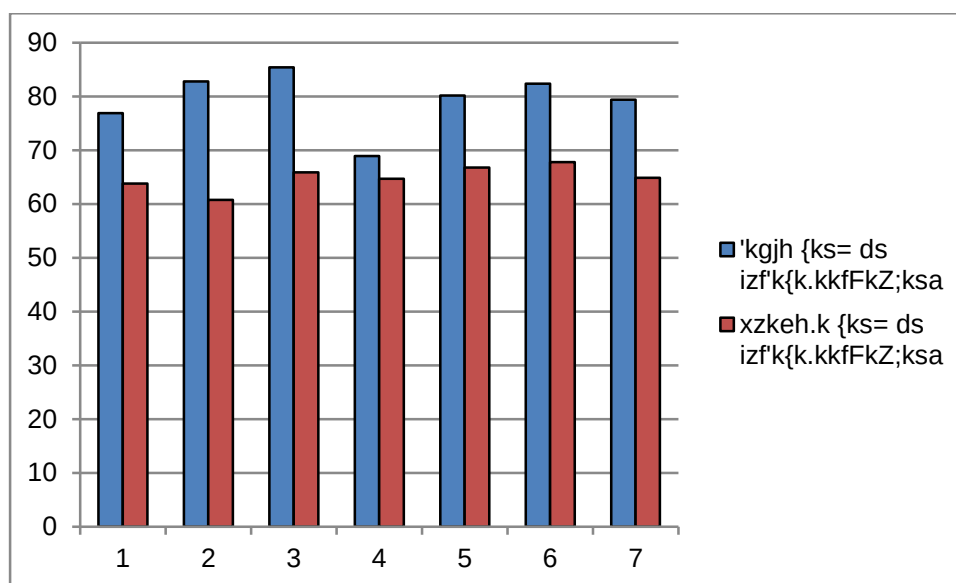
रेखा-चित्र बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत समग्र प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति अभिमत का प्रतिषत मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

व्याख्या :-

सारणी 4 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत समग्र प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि की मानकीकृत मापनी के सभी क्षेत्रों पर व्यक्त राय के प्राप्त प्राप्तांकों का समग्र प्रतिषत मध्यमान 72.2 प्राप्त हुआ। जो कि मानक सारणी के अनुसार औसत स्तर (60 से 80) के मध्य पाया गया तथा प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि मापनी के सभी क्षेत्रों के समग्र प्रतिषत मध्यमान 72.2 के सापेक्ष में मापनी के सांविगिक क्षेत्र के लिए सर्वाधिक प्रतिषत मध्यमान 75.6 तथा शैक्षिक क्षेत्र के लिए सबसे कम प्रतिषत मध्यमान 66.8 पाया गया। निष्कर्षतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत समग्र प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि औसत स्तर में पाया गया तथा मापनी के सांविगिक क्षेत्र पर सर्वाधिक तथा शैक्षिक पर सबसे न्यून प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि पाया गया।

तालिका 5 बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति अभिमत का प्रतिषत मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि मापनी के क्षेत्र	शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों	ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों
1.	शारीरिक	76.9	63.8
2.	समाजिक	82.8	60.8
3.	सांविगिक	85.4	65.9
4.	शैक्षिक	68.9	64.7
5.	नैतिक	80.2	66.8
6.	बौद्धिक	82.4	67.8
7.	समग्र	79.4	64.9



रेखा-चित्र 5 बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचिके प्रति अभिमत का प्रतिषत मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

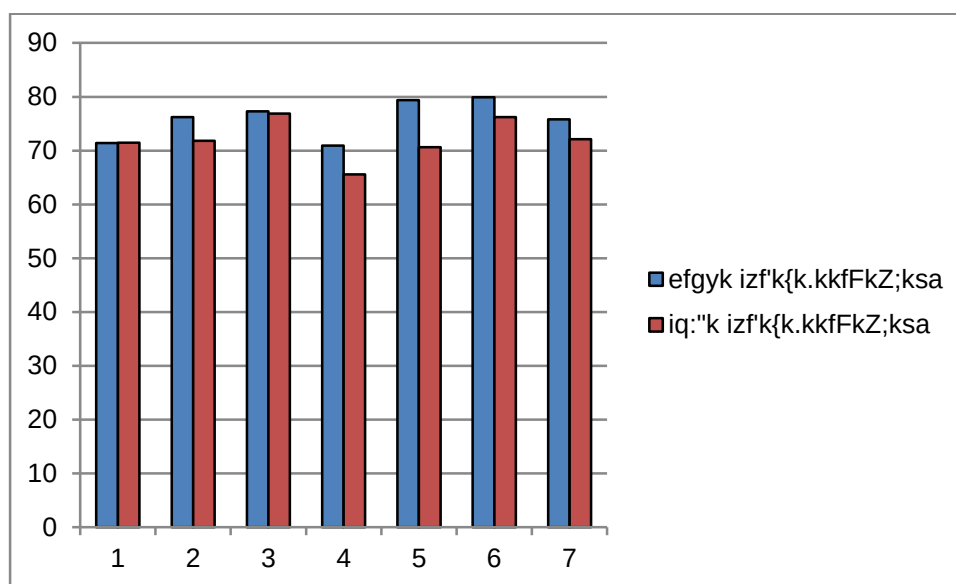
व्याख्या: -

सारणी 5 के प्राप्त आँकड़ों से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं शिक्षक महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि की मानकीकृत मापनी के सभी क्षेत्रों पर व्यक्त राय के प्राप्त प्राप्तांकों का समग्र प्रतिशतमध्यमान 79.4 प्राप्त हुआ। जो कि मानक सारणी के अनुसार औसत स्तर (60 से 80) के मध्य पाया गया तथा प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि मापनी के सभी क्षेत्रों के समग्र प्रतिशतमध्यमान 79.4 के सापेक्ष में मापनी के सांविगिक क्षेत्र के लिए सर्वाधिक प्रतिशतमध्यमान 85.4 तथा शैक्षिक क्षेत्र के लिए सबसे कम प्रतिषत मध्यमान 68.9 पाया गया। निष्कर्ष: शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि औसत स्तर में पाया गया तथा मापनी के सांविगिक क्षेत्र पर सर्वाधिक तथा शैक्षिक पर सबसे न्यून प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि पाया गया। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि की मानकीकृतमापनी के सभी क्षेत्रों पर व्यक्त राय के प्राप्त प्राप्तांकों का समग्र प्रतिशत मध्यमान 64.9 प्राप्त हुआ।

जो कि मानक सारणी के अनुसार औसत स्तर (60 से 80) के मध्य पाया गया तथा प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि मापनी के सभी क्षेत्रों के समग्र प्रतिशतमध्यमान 64.9 के सापेक्ष में मापनी के बौद्धिक क्षेत्र के लिए सर्वाधिक प्रतिशतमध्यमान 67.8 तथा सामाजिक क्षेत्र के लिए सबसे कम प्रतिशतमध्यमान 60.8 पाया गया। निष्कर्ष: शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि औसत स्तर में पाया गया तथा मापनी के बौद्धिक क्षेत्र पर सर्वाधिक तथा सामाजिक पर सबसे न्यून प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि पाया गया।

तालिका 6 बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति अभिमत का प्रतिशतमध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.स	प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि मापनी के क्षेत्र	महिला प्रशिक्षणार्थियों	पुरुष प्रशिक्षणार्थियों
1.	शारीरिक	71.41	71.44
2.	समाजिक	76.2	71.8
3.	संविगिक	77.3	76.9
4.	शैक्षिक	70.9	65.6
5.	नैतिक	79.4	70.6
6.	बौद्धिक	79.9	76.2
7.	समग्र	75.8	72.1



रेखा-चित्र 6 बिहार राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि के प्रति अभिमत का प्रतिशतमध्यमान के आधार पर विश्लेषण

व्याख्या :-

सारणी 6 के प्राप्त आँकड़ों से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं:- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि की मानकीकृत मापनी के सभी क्षेत्रों पर व्यक्त राय के प्राप्त प्राप्तांकों का समग्र प्रतिशतमध्यमान 75.8 प्राप्त हुआ। जो कि मानक सारणी के अनुसार औसत स्तर (60 से 80) के मध्य पाया गया तथा प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि मापनी के सभी क्षेत्रों के समग्र प्रतिशतमध्यमान 75.8 के सापेक्ष में मापनी के बौद्धिक क्षेत्र के लिए सर्वाधिक प्रतिशत मध्यमान 79.9 तथा शैक्षिक क्षेत्र के लिए सबसे कम प्रतिशत मध्यमान 70.9 पाया गया। निष्कर्ष: शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षुओं का शिक्षण अभिरूचि औसत स्तर में पाया गया तथा मापनी के बौद्धिक क्षेत्र पर सर्वाधिक तथा शैक्षिक पर सबसे न्यून प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचिपाया गया। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि की मानकीकृत मापनी के सभी क्षेत्रों पर व्यक्त राय के प्राप्त प्राप्तांकों का समग्र प्रतिशत मध्यमान 72.1 प्राप्त हुआ। जो कि मानक सारणी के अनुसार औसत स्तर (60 से 80) के मध्य पाया गया तथा प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि मापनी के सभी क्षेत्रों के समग्र प्रतिशतमध्यमान 72.1 के सापेक्ष में मापनी के सांविगिक क्षेत्र के लिए सर्वाधिक प्रतिशतमध्यमान 76.9 तथा शैक्षिक क्षेत्र के लिए सबसे कम प्रतिशतमध्यमान 65.6 पाया गया। निष्कर्ष: शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि औसत स्तर में पाया गया तथा मापनी के सांविगिक क्षेत्र पर सर्वाधिक तथा शैक्षिक पर सबसे न्यून प्रशिक्षुओंका शिक्षण अभिरूचि पाया गया।

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव**शोध सारांश**

शिक्षा का गुणात्मक स्तर शिक्षकों के स्तर पर आश्रित होता है। इसलिए शिक्षा आयोग के अनुसार भारतीय शिक्षा के गुणात्मक एवं राष्ट्रीय विकास में शिक्षक की योग्यता व गुण ही विशेष महत्व रखते हैं। शिक्षा की सफलता एवं असफलता एक सीमा तक शिक्षकों के हाथ में होती है एवं शिक्षक ही वह साधन है, जो उसके विद्यार्थियों को नई दिशाएँ प्रदान कर सकता अतः बालक के उचित व्यवहार परिवर्तन व परिवर्धन का आधार अध्यापक है। अध्यापक का प्राथमिक कर्तव्य छात्रों में स्वस्थ अभिवृत्ति, रुचियों आदर्शों एवं उच्च नैतिक एवं उत्तरदायित्वों को तभी पूरा किया जा सकता है जबकि अध्यापक स्वयं अपने कार्य में दक्ष हो तथा उसकी रुचि अध्यापन व्यवसाय के प्रति हो। अच्छा अध्यापक उसी को माना जा सकता है, जो मनोविज्ञान का ज्ञाता हो, आत्मविश्वासी हो, संदर्भित दक्षता से युक्त हो, जिसकी अध्यापन व्यवसाय के प्रति सोच अच्छी हो, मनोवृत्ति अच्छी हो तथा वे अध्यापन व्यवसाय के प्रति झुकाव रखते हो।

निष्कर्ष

शिक्षक जिस प्रकार के संस्कारों का निर्माण अपने बालकों में करता है, उसी अनुरूप समाज व राष्ट्र का विकास होता है। समाज व राष्ट्र की प्रगति में शिक्षक के विचारों व व्यवहार का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। शिक्षक के अपने स्वयं के बारे में जो विचार या धारणा है वह उसकी 'उपलब्धि' है। हमें स्वयं अपने बारे में क्या सोचते हैं? इसे बिना जाने व्यक्ति अपने वातावरण में समायोजन स्थापित नहीं कर सकता। एक भावी शिक्षक किस प्रकार की स्वप्रयत्न रखता है इसका ज्ञान प्राप्त करना शैक्षिक गति के उन्नयन के लिए अति आवश्यक है तभी वह अपने छात्रों के व्यक्तित्व को समुन्नत बना सकता है।

बालक के जीवन एवं इसकी शिक्षा में अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा का अर्थ केवल शिक्षण नहीं है, बल्कि वह उसको इस योग्य बना सके कि वह स्वयं अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर उस तक पहुँचने में सक्षम हो सके। यह तभी सम्भव होता है जब उसको अपने लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान होगा। लक्ष्य के स्पष्ट ज्ञान हेतु सशक्त अभिप्रेरणा का होना परम् अनिवार्य है। अभिप्रेरणा मानव व्यवहार को निर्देशित करने वाली वह प्रक्रिया है जो अभिप्रेरित व्यवहार उत्पन्न होने के बाद उद्देश्य प्राप्ति तक जारी रहती है। साथ ही अभिप्रेरणा व्यक्ति की एक ऐसी आन्तरिक अवस्था को कहा जाता है जो व्यक्ति को सक्रिय बनाकर उसके व्यवहार को एक विषिष्ट दिशा में उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अग्रसर करता है। जिन प्रशिक्षार्थियों में उपलब्धि प्रेरणा अधिक होती है, वे अपने जीवन में अधिक उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

शिक्षक जिस प्रकार के संस्कारों का निर्माण अपने बालकों में करता है, उसी अनुरूप समाज व राष्ट्र का विकास होता है। समाज व राष्ट्र की प्रगति में शिक्षक के विचारों व व्यवहार का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। शिक्षक के अपने स्वयं के बारे में जो विचार या धारणा है वह उसकी 'उपलब्धि' है। हम स्वयं अपने बारे में क्या सोचते हैं? इसे बिना जाने व्यक्ति अपने वातावरण में समायोजन स्थापित नहीं कर सकता। एक भावी शिक्षक किस प्रकार की उपलब्धि रखता है इसका ज्ञान प्राप्त करना शैक्षिक प्रगति के उन्नयन के लिए अति आवश्यक है तभी वह अपने छात्रों के व्यक्तित्व को समुन्नत बना सकता है। बालक के जीवन एवं इसकी शिक्षा में अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा का अर्थ केवल शिक्षण नहीं है, बल्कि वह उसको इस योग्य बना सके कि वह स्वयं अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर उस तक पहुँचने में सक्षम हो सके। यह तभी सम्भव होता है जब उसको अपने लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान होगा। लक्ष्य के स्पष्ट ज्ञान हेतु सशक्त अभिप्रेरणा का होना परम् अनिवार्य है।

विक्षेपण से यह स्पष्ट है कि जो प्रशिक्षु शिक्षण में उच्च स्तर की रुचि प्रदर्शित करते हैं, वे अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। शिक्षण के प्रति उनका उत्साह न केवल पाठ्यक्रम सामग्री से जुड़ने के लिए उनकी प्रेरणा को बढ़ाता है, बल्कि उन्हें प्रभावी शिक्षक बनने के लिए आवश्यक कौशल से भी लैस करता है। रुचि और उपलब्धि के बीच यह संबंध प्रशिक्षुओं के शिक्षण के प्रति जुनून को बढ़ावा देने वाले माहौल को बढ़ावा देने के महत्व को उजागर करता है। इसके अलावा, अध्ययन विहार के विभिन्न कॉलेजों में शिक्षण रुचि और शैक्षणिक प्रदर्शन के विभिन्न स्तरों को रेखांकित करता है।

संदर्भ

- [1] एडेडिवुरा, ए. ए और बाडा, टी. (2017) नाइजीरियाई माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षणिक प्रदर्शन के भविष्यवक्ता के रूप में शिक्षकों के ज्ञान, दृष्टिकोण और शिक्षण कौशल की धारणा जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड रिव्यू, 2 (7), 165-171
- [2] अग्रवाल, आर. और मिश्रा, केएस (2022) विज्ञान अवधारणाओं की प्राप्ति को बढ़ाने के लिए शिक्षण के रिसेप्शन अवधारणा प्राप्ति मॉडल की प्रभावशीलता। भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 23(2), 130-136
- [3] एजेना, ईएमय टियोनगसन, बीएलय अरेवलो, बी.य क्लेमेनो , एमसीय डोलर, जी. और लैगुआडोर , जेएम (2015) कक्षा के सामाजिक वातावरण पर समुद्री परिवहन और समुद्री इंजीनियरिंग छात्रों का रवैया। एशियन जर्नल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज, 2(1), 7-15।
- [4] अग्रवाल, जे.सी. (2013) शैक्षिक प्रौद्योगिकी की अनिवार्यता रू शिक्षण-सीखने में नवाचार। दिल्ली रू विकास पब्लिकेशन हाउस।
- [5] अहमद, मै.य कहा, एचबी और जिव , ए. (2013) चिंतनशील अभ्यास शिक्षकों के कक्षा शिक्षण कौशल को कैसे बेहतर बनाता है? जिला चित्राल, खैबर पख्तूनख्वा में समुदाय आधारित स्कूलों का मामला । इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज, 4 (1), 73-81।
- [6] अहमद, एस. और सुल्ताना, ए. (2013) सूक्ष्म-शिक्षण के माध्यम से शिक्षण व्यवहार में संशोधन। भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 51(1), 5-12.
- [7] शिराज में मार्गदर्शन स्कूलों के छात्रों, शिक्षकों और प्राचार्यों के दृष्टिकोण से शिक्षण कौशल विकास में सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का एक सर्वेक्षण।
- [8] अहमद, एके (2014) माध्यमिक विद्यालय स्तर पर गणित के शिक्षण में अवधारणा प्राप्ति मॉडल की प्रभावशीलता का एक अध्ययन। इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, 4 (4), 1-3.
- [9] अहमद, जीएय शफकत , जेए और बाजवा, एन. (2019) शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में अंग्रेजी के शिक्षण में अवधारणा प्राप्ति मॉडल और पारंपरिक पद्धति की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन। भारत में भाषा, 12 (4), 196-208।
- [10] एल्डवस , एस. (2008) लीबियाई अंग्रेजी विदेशी भाषा प्राथमिक कक्षा में कक्षा की बातचीत और विद्यार्थियों के सीखने पर भाषा के खेल के प्रभाव की जांच। अप्रकाशित पीएच.डी. शिक्षा की थीसिस, न्यूकैसल विश्वविद्यालय, इंग्लैंड।
- [11] एलन और रयान (1969) माइक्रोटीचिंग, रीडिंग, मास बोस्टन एडिसन वेस्ले

- [12] एलन, डीडब्ल्यू (1966) शिक्षा के शिक्षण रणनीति स्कूल के अधिग्रहण पर फीडबैक और अभ्यास स्थितियों का प्रभाव। कैलिफोर्निया स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय
- [13] एलन, डीडब्ल्यू (2015) सूक्ष्म-शिक्षण एक विवरण कैलिफोर्निया स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय
- [14] ऑलराइट, डी. (2017) कक्षा में भाषा सीखने में अंतःक्रिया का महत्व। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, 5 (2), 156-171
- [15] अमिता (2015) नौवीं कक्षा में जीवविज्ञान शिक्षण में अवधारणा मानचित्रण मॉडल और अवधारणा प्राप्ति मॉडल की प्रभावशीलता। 15 जुलाई, 2015 को <http://eshodhnga-inflibnet-ac-in.handle/10603/37009> से लिया गया।
- [16] अंदाबाई, पीडब्लू (2013) नाइजीरियाई तृतीयक संस्थानों में प्रशिक्षु शिक्षकों पर शिक्षण अभ्यास का प्रभावरू नाइजर डेल्टा विश्वविद्यालय का अनुभव एकेडमिक जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज, 2 (5), 109-115
- [17] एंडरसन, एलडब्ल्यू (2019) प्रभावी शिक्षक, अध्ययन मार्गदर्शिका और पढ़ना न्यूयॉर्क रैंडम हाउस
- [18] अंजुम, एसके (2014) औरंगाबाद शहर के अंग्रेजी माध्यम के आठवीं कक्षा के छात्रों की ज्यामितीय अवधारणाओं की उपलब्धि पर अवधारणा प्राप्ति मॉडल का एक अध्ययन प्रभाव अंतःविषय अध्ययन के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी द्वारा समीक्षित स्कॉलरली रिसर्च जर्नल, 2 (25), 2451-2456
- [19] अनमर, एएमआई (2008) भावी अंग्रेजी विदेशी भाषा शिक्षकों की समय प्रबंधन रणनीतियों को उनके शिक्षण प्रदर्शन और अनुदेशात्मक आत्म-प्रभावकारिता पर बढ़ाने का प्रभाव अप्रकाशित पीएच.डी. शिक्षा की थीसिस, किंग सऊद विश्वविद्यालय, सऊदी अरब
- [20] एंटोनियो, पी. और क्यारीकिडास, एल. (2011) शिक्षक निर्देश और छात्र सीखने पर व्यावसायिक विकास के लिए गतिशील दृष्टिकोण का प्रभाव एक प्रयोगात्मक अध्ययन से परिणाम स्कूल और स्कूल सुधार अनुसंधान नीति और अभ्यास का एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 22 (3), 291-331